महाभारत की द्रौपदी: स्वाभिमानी स्त्री के रूप में

नाम - नेहा सागर

स्नातक शोधार्थी

संस्कृत विभाग

मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली - 110007

शोध पत्र सारांश

भूमिका

भारतीय महाकाव्य परंपरा में महाभारत अपना एक विशेष स्थान रखता है। महाभारत को केवल एक ऐतिहासिक या पौराणिक कथा ही नहीं, बल्कि भारतीय समाज का सांस्कृतिक, धार्मिक और नैतिक मूल्यों के दृष्टिकोण से व्यापक दर्पण भी माना जाता है। इस महाकाव्य ने भारतीय संस्कृति में अपना एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके अनेक चरित्रों के माध्यम से मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष के लिए आदर्श और संघर्ष का चित्रण मिलता है। इन्हीं पात्रों में से द्रौपदी का व्यक्तित्व अत्यंत प्रभावशाली और विशिष्ट रहा है। महाभारत में द्रौपदी को केवल एक पौराणिक पात्र नहीं, बल्कि उसे आत्म सम्मान, साहस और स्वाभिमान का प्रतीक माना गया है।

शोध के उद्देश्य -

प्रस्तुत शोध पत्र के उद्देश्य निम्नलिखित प्रकार से हैं -

महाभारत में द्रौपदी के चरित्र का अध्ययन करके उसके चरित्र को स्वाभिमानी स्त्री के रूप में विश्लेषित करना।

द्रौपदी के चरित्र में निहित स्वाभिमान, आत्मगौरव और आत्मसम्मान के तत्वों का विश्लेषण करना

आधुनिक नारी - विमर्श के परिप्रेक्ष्य में द्रौपदी के चरित्र की प्रासंगिकता का अध्ययन करना

भारतीय संस्कृति में द्रौपदी को नारी - अस्मिता के रूप में स्थापित करना

शोध के अपेक्षित परिणाम

प्रस्तुत शोध पत्र के परिमाण निम्नलिखित हैं -

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य महाभारत की द्रौपदी को स्वाभिमानी स्त्री के रूप में विश्लेषित करना है।

इसके अध्ययन से स्पष्ट होगा कि द्रौपदी ने विषम परिस्थितियों में भी अपने आत्मसम्मान और स्वाभिमान को सर्वोपरि रखा।

प्रस्तुत शोध पत्र यह प्रतिपादित करेगा कि द्रौपदी का व्यक्तिव भारतीय समाज में नारी - अस्मिता और उसके अधिकारों का प्रतीक है।

शोध पद्धति - प्रस्तुत शोध पत्र विश्लेषणात्मक और व्याख्यात्मक शोध पद्धति का शोध है। इसमें महाभारत का गहन अध्ययन कर द्रौपदी से संबंधित सभी प्रसंगों का सूक्ष्मता के साथ विश्लेषण किया गया है। इसके अतिरिक्त इस विषय से संबंधित विभिन्न शोध - लेखों और नारी - विमर्श संबंधी पुस्तकों का भी अध्ययन किया गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक स्रोत में महाभारत और द्वितीयक स्रोत में शोध - पात्रों का उपयोग किया गया है

प्रमुख शब्दावली:-पौराणिक, ऐतिहासिक , विश्लेषित, आत्म गौरव, स्वामानिनी,ध्यूतसभा,ध्यूत क्रीड़ा, प्रतिरोध, प्रतिशोध, नारी अस्मिता।

महाभारत की द्रौपदी: स्वाभिमानी स्त्री के रूप में

महाभारत: एक संक्षिप्त परिचय:-

वेद व्यास विरचित महाभारत भारतीय साहित्य और दर्शन परम्परा में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह ग्रंथ केवल एक महाकाव्य नहीं है , बल्कि धर्म, नीति , राजनीति, समाज और मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष को उजागर करता है। महाभारत में जीवन के प्रत्येक पक्ष का गहन विचार प्रस्तुत किया गया है, जिस कारण इसे 'पंचम वेद' भी कहा जाता है।

प्रस्तावना :-

भारतीय समाज में स्त्री की छवि को सदैव सहनशील, त्यागमयी और मर्यादित रूप में अंकित किया गया है। स्त्री समाज का एक विशिष्ट और अभिन्न अंग है। आदिकाल से ही स्त्री द्वारा अपने प्रेम, शक्ति और त्याग से समाज को परिचालित किया गया है। भारतीय संस्कृति में स्त्री को पूजनीय पात्र माना गया है। स्त्रियों ने सदैव पुरुषों के साथ चलकर समाज में अपना विशेष योगदान दिया है, किंतु जब- जब स्त्रियों के स्वाभिमान पर आंच आई है, उन्होंने अपने आत्म सम्मान और अधिकारों के लिए समाज के रुढ़िवादी दृष्टिकोण की परवाह किये बिना अपनी आवाज को बुलंद किया है , ऐसी ही एक स्वाभिमानी स्त्री द्रौपदी रही, जिन्होंने अपने अपमान का प्रतिशोध लेने का दृढ़ संकल्प लिया और भारतीय समाज में स्वाभिमानी स्त्री के रूप में उभरी। द्रौपदी का स्वाभिमान ही उसे महाकाव्य 'महाभारत' की नायिका बनाता है। सामान्यतः द्रौपदी को पाँच पतियों की पत्नी और द्युत्सभा में अपमानित हुई स्त्री के रूप में जाना जाता है, किंतु द्रौपदी का व्यक्तिव इससे अधिक व्यापक और सशक्त है।

स्वाभिमान की संकल्पना:- "स्वाभिमान"शब्द दो शब्दों से निर्मित है - 'स्व' अर्थात् अपना अस्तित्व और 'अभिमान' अर्थात् गौरव बोध ।

इस प्रकार स्वाभिमान का आशय हुआ अपने आत्मसम्मान और अधिकारों के प्रति सम्मान रखते हुए अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध करना।

महाभारत की द्रौपदी को हम स्वाभिमानी स्त्री के रूप में देखते हैं।ध्यूतसभा में हुए अपने अपमान को द्रौपदी ने मौन रह कर नहीं सहा, बल्कि उसने सभा में मौजूद सभी विद्वानों से प्रश्न किया -

"क्या जिस व्यक्ति ने पहले स्वयं को दास बना दिया, उसे अपनी पत्नी को दांव पर लगाने का अधिकार है?"

द्रौपदी का साहसपूर्ण प्रश्न यह बतलाता है कि द्रौपदी ने स्वयं को एक वस्तु के रूप में स्वीकार नहीं किया।

द्रौपदी ने सभा में विद्यमान सभी महापुरुषों भीष्म, द्रोण विदुर और अन्य लोगों के मौन का विरोध किया।

द्रौपदी का स्वाभिमान यहाँ पूर्ण रूप से प्रकट होता है। उन्होंने न तो अन्याय को मौन रह कर सहा और न ही अपने अस्तित्व को एक वस्तु के रूप में स्वीकारा।

द्रौपदी का जन्म और व्यक्तित्व :-

द्रौपदी पांचाल नरेश द्रुपद की प्रभावशालिनी पुत्री थी, जिसका जन्म यज्ञकुंड की अग्नि से हुआ। वेदव्यास कृत महाभारत के आदिपर्व में द्रौपदी के जन्म का प्रसंग प्राप्त होता है। यह प्रसंग केवल द्रौपदी की उत्पत्ति का विवरण नहीं है, अपितु एक सांकेतिक उद्घोष भी है कि भविष्य काल में यह स्त्री ' द्रौपदी' महाभारत महाकाव्य की धुरी बनेगी। उल्लेख मिलता है कि पांचाल नरेश द्रुपद ने अपने अपमान का प्रतिशोध लेने के लिए एक यज्ञ का आयोजन कराया और इसी यज्ञकुंड की ज्वालाओं से धृष्टद्युम्न और द्रौपदी उत्पन्न हुए।

द्रौपदी को याज्ञसेनी और पांचाली के नाम से जाना जाता है जो आगे चलकर हस्तिनापुर राज्य की पुत्रवधू कहलाई।

द्रौपदी का व्यक्तित्व अत्यंत प्रभावशाली रहा है। द्रौपदी आदर्श सुगृहिणी, पतिव्रता , बुद्धिमती, तेजस्विता, स्वाभिमानिनी एवं धैर्यशीलता आदि गुणों से परिपूर्ण और सर्वथा अनुकरणीय है।

अपने स्वयंवर में वैसे तो उन्होंने अर्जुन को वरमाला पहनाई, किंतु परिस्थितिवश उन्हें पाँचों पांडवों से विवाह करना पड़ा। यह परिस्थिति उनके जीवन का जटिल मोड़ बनी, जहाँ उन्होंने उसे अपनी गरिमा के साथ स्वीकार किया।

स्वयंवर और स्वतंत्र निर्णय:-

द्रौपदी के स्वयंवर का प्रसंग महाभारत का अत्यंत महत्वपूर्ण प्रसंग है। द्रौपदी के पिता राजा ध्रुपद ने उसके वर चयन हेतु स्वयंवर का आयोजन कराया, किन्तु यह आयोजन केवल एक वर चयन के लिए ही नहीं था, अपितु इसमें राजसत्ता, क्षत्रिय धर्म और गौरव की परीक्षा को भी देख गया। इस आयोजन में अनेक देशों के राजा और राजकुमार सम्मिलित हुए। इस स्वयंवर की शर्त यह थी कि जो वीर राजकुमार दुर्धर्ष धनुष को उठाते हुए अपने बाण से लक्ष्य को भेदेगा वही द्रौपदी के विवाह योग्य माना जाएगा।

इस प्रसंग में हम देख सकते हैं कि यह स्वयंवर न केवल एक शारीरिक प्रतियोगिता थी, अपितु धैर्य, कौशल और आत्मसंयम का भी परिचय देती है। इस प्रतियोगिता में कर्ण, दुर्योधन और शकुनि ने भी लक्ष्य भेदने का प्रयास किया, किन्तु सफल नहीं हो सके। इसी प्रसंग में द्रौपदी द्वारा कर्ण को अस्वीकार करना उसकी स्वतंत्रता का प्रतीक है, जहां उँसने कहा है कि वह सूत पुत्र कर्ण को अपने वर रूप में स्वीकार नहीं करेगी, उसने केवल एक क्षत्रिय को ही अपने पति रूप में स्वीकार करने का निश्चय किया।

वैसे तो द्रौपदी के इस कथन ने इतिहास में बहुत से मतभेदों को जन्म दिया और इसी सन्दर्भ में कहा भी जाता है कि महाभारत युद्ध के होने का यह गुप्त कारण (कर्ण का अपमान) माना गया है। वहीं दूसरी ओर द्रौपदी का यह कथन उसे एक स्वतंत्र नारी के रूप में प्रस्तुत करता है, जहां ँउसने अपनी स्वतंत्रता का परिचय देते हुए अपने वर को चुनने का अधिकार व्यक्त किया।

महाभारत का यह प्रसंग स्पष्ट करता है कि स्त्रियों को उस समय अपनी स्वतंत्रता के साथ वर चयन का भी अधिकार था। उस समय विवाह के लिए कुछ सामाजिक नियम थे जिसमें विवाह समान कुल/ वर्ण में ही होना चाहिए।

द्रौपदी के इस कथन ने दर्शाया कि वह उस समय के सामाजिक नियमों का प्रतिनिधित्व करने के साथ - साथ स्वतंत्र निर्णय लेने वाली नायिका थी। उसने सभा में विद्यमान सभी विद्वानों और पराक्रमी योद्धाओं के समक्ष निर्भीक होकर अपनी स्वतंत्रता का परिचय देते हुए, कर्ण जैसे वीर योद्धा को भी अपने वर के रूप में स्वीकार करने में असहमति व्यक्त की।

अर्जुन द्वारा इस लक्ष्य को भेदकर द्रौपदी से विवाह किया गया और द्रौपदी द्वारा भी अर्जुन को अपने वर के रूप में स्वीकार किया गया, किन्तु द्रौपदी की नियति में कुछ और ही था। द्रौपदी को परिस्थितिवश पांचों पांडवों से विवाह करना पड़ा, जो उनके जीवन का निर्णायक मोड़ था। इस प्रकार द्रौपदी का विवाह उसके सौन्दर्य और कुशलता के साथ - साथ उनके स्वाभिमान का भी प्रतीक था, जो उन्हें इस महाकाव्य की नायिका के रूप में प्रतिष्ठित करता है

ध्यूतसभा प्रसंग: स्वाभिमान का चरम:-

द्यूतसभा महाभारत का सबसे मार्मिक और निर्णायक प्रसंग है। यह प्रसंग ही द्रौपदी को महाकाव्य की नायिका के रूप में उभरता है।

इस प्रसंग में धर्मराज युधिष्ठिर द्यूत क्रीड़ा में अपना सब कुछ दांव पर लगाकर दुर्योधन और शकुनि से बुरी तरह पराजित हुए। युधिष्ठिर ने न केवल अपना राज - पाट दांव पर लगाया , बल्कि अपने भाइयों को भी द्यूत क्रीड़ा में हारकर उन्हें भी दुर्योधन का दास बना दिया। अंत में युधिष्ठिर अपनी पत्नी द्रौपदी को भी दांव पर लगा कर हार गये। महाभारत का यही क्षण था, जिसने द्रौपदी के जीवन को पूरी तरह बदल दिया।

द्रौपदी को राजसभा में बुलाने के लिए दुर्योधन ने अपने सारथी को भेजा किंतु द्रौपदी ने उस समय आने से मना कर दिया और कहा कि वह अपने पतियों के अलावा अन्य किसी पुरुष की आज्ञा का पालन नहीं करती। द्रौपदी का यह उत्तर उसे एक पतिव्रता पत्नी के रूप में दर्शाता है, जो अन्य किसी पुरुष की बात को सुनना भी स्वीकार नहीं करती।

अंत में दुः शासन द्वारा द्रौपदी को अपमानित करते हुए सभा में लाया जाता है, जहाँ भीष्म, द्रोणाचार्य, विदुर आदि ने इस कृत्य को मौन रह कर देखा, किंतु किसी ने भी उस अन्याय के विरुद्ध आवाज नहीं उठाई।

उस स्थिति को देखते हुए द्रौपदी ने राजसभा में विद्यमान महापुरुषों से धर्म आधारित प्रश्न किये -

" क्या द्यूत क्रीड़ा में धर्म समाप्त हो जाता है?"

"जो स्वयं को दांव पर लगा कर हार गया, उस व्यक्ति को मुझे दांव पर लगाने का अधिकार है?"

यहाँ द्रौपदी के साहस और तार्किक प्रश्न ने पूरी राजसभा को चुनौती दी, जहाँ उसका सभी के सामने अपमान हुआ और किसी ने उसका विरोध नहीं किया।

इस प्रसंग में द्रौपदी केवल एक पीड़िता (अपमानित स्त्री) नहीं, बल्कि धर्म की परिभाषा करने वाली एक साहसी और स्वाभिमानी स्त्री है, जिसने न केवल अपने अपमान का प्रतिरोध किया, बल्कि उसने स्वयं के अस्तित्व को एक वस्तु के रूप में बिल्कुल स्वीकार नहीं किया। दुःशासन ने जब द्रौपदी का वस्त्र हरण करना प्रारंभ किया, तब द्रौपदी ने राजसभा के सभी पुरुषों से कहा कि अब तुम मेरे सम्मान की रक्षा करने लायक नहीं हो और अंततः उसने किसी अन्य पुरुष पर अपनी रक्षा के लिए निर्भर न होकर स्वयं की रक्षा हेतु भगवान श्रीकृष्ण का स्मरण किया। महाभारत के इस दृश्य से सभी आश्चर्यचकित हो जाते हैं, जहाँ चीरहरण प्रसंग एक चमत्कार नहीं है, अपितु उस स्त्री की शक्ति और आस्था का प्रतीक है, जिसने स्वयं को पूर्णतः अपने ईश्वर के प्रति समर्पित कर दिया।

महाभारत का यह प्रसंग दर्शाता है कि जब-जब किसी स्त्री के स्वाभिमान पर आंच आई है और वह अपने आत्मसम्मान और आत्मगौरव के लिए समस्त समाज के विरुद्ध गई है, तब ईश्वर ने भी उस स्त्री के स्वाभिमान का सम्मान रखते हुए उसका साथ दिया है।

अपमान और प्रतिशोध का संकल्पः-

ध्यूतसभा में हुए अपने अपमान का द्रौपदी ने घोर प्रतिरोध किया। द्रौपदी उसी समय संकल्प लेती है और कहती है कि जब तक दुर्योधन और दुःशासन को उनके कृत्य का दंड नहीं मिलेगा,तब तक वह अपने केश नहीं बाँधेगी।

अपने पाँचों पतियों के साथ वनवास जाने से पहले सभा में द्रौपदी ने यह प्रण लिया कि जब पांडव वन से लौटेंगे तब कौरव मुझे अपने पतियों को युद्ध के लिए प्रेरित करते देखेंगे।

द्रौपदी अपने अपमान को कभी नहीं भुलाती है। वनवास के समय भी वह अपने पतियों को अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए प्रेरित करती है, जिससे उसके अपमान का प्रतिशोध पूर्ण हो सके। द्रौपदी के प्रतिशोध का

यह संकल्प केवल व्यक्तिगत क्रोध का प्रीतक ही नहीं, बल्कि अन्याय और अधर्म के विरुद्ध धर्म और न्याय की मांग का प्रतिनिधित्व करता है।

द्रौपदी द्वारा अपने प्रतिशोध की यह प्रतिज्ञा ही कुरूक्षेत्र के युद्ध का नैतिक आधार बनी।

पांडवों के साथ 12 वर्ष के वनवास और एक वर्ष के अज्ञातवास में द्रौपदी के चरित्र की परीक्षा और भी अधिक गहरी हो जाती है।

द्रौपदी अपने पतियों के साथ वन गईं जहाँ उन्होंने अपने भोग - विलास का त्याग करते हुए एक आम व्यक्ति की तरह जीवन यापन किया और अपने पतियों का साथ निभाया। द्रौपदी ने सभी प्रकार की कठिनाइयों का धैर्यपूर्वक सामना किया, इस संघर्ष में द्रौपदी केवल एक पतिव्रता पत्नी नहीं, बल्कि एक संघर्षशील नायिका के रूप में भारतीय संस्कृति में जानी जाती हैं।

द्रौपदी के हृदय में अपने अपमान की स्मृति सदैव जलती रही, जिसके लिए उन्होंने अर्जुन और भीम को कौरवों से प्रतिशोध लेने के लिए समय - समय पर प्रेरित किया। वह अपने पतियों को वन में निरंतर राजसभा में हुए अपमान का स्मरण कराती रही।

भीम से द्रौपदी ने कहा -

भीम! जब तक कौरवों को उनके कृत्य का दंड नहीं मिलेगा, मुझे मेरा जीवन जीने की कोई इच्छा नहीं है, सभा में मेरा जो अपमान हुआ है उसे मैं भुला नहीं पाती हूँ, उस अपमान से मेरा हृदय दग्ध होता है।

उद्योग पर्व में भी एक प्रसंग मिलता है जिसमें द्रौपदी कहती है कि -

“जब तक कौरवों का विनाश नहीं हो जाता, मुझे न सुख का अनुभव होता न ही शांति का। जब तक मेरा अपमान करने वाले जीवित रहेंगे, पांडवों की विजय और कौरवों का पतन की मेरा एक मात्र संकल्प रहेगा।”

इन सभी प्रसंगों से ज्ञात होता है कि द्रौपदी ने न केवल अपने अपमान का प्रतिशोध लेने का संकल्प किया, बल्कि समाज की प्रत्येक नारी के लिए प्रेरणादायक कहानी बनी जो उन्हें उनके स्वाभिमान की रक्षा करने के लिए प्रेरित करती है।

द्रौपदी और नारी अस्मिताः-

द्रौपदी का चरित्र केवल व्यक्तिगत और पारिवारिक संघर्षों का परिचय नहीं देता बल्कि उन्हें नारी चेतना का प्रतीक बनाता है। उनका चरित्र नारी अस्मिता का सशक्त उदाहरण है, जहाँ उन्होंने स्वयं के अस्तित्व को एक वस्तु के रूप में न केवल अस्वीकार किया बल्कि महाभारतकालीन सामाजिक व्यवस्था को भी चुनौती दी। द्रौपदी ने स्वयं के अपमान को कभी अपने हृदय से नहीं भुलाया। उन्होंने ध्यूतसभा के अन्यायपूर्ण वातावरण पर प्रश्न उठाए और अपने अपमान का क्रोधित होकर विरोध किया।

द्रौपदी के चरित्र से ज्ञात होता है कि स्त्री कोई वस्तु नहीं है, उसे भी स्वतंत्र रूप से जीवन जीने का अधिकार है। द्रौपदी जैसी सशक्त और स्वाभिमानी स्त्री किसी को भी अपना तिरस्कार करने का अधिकार नहीं देती। एक स्त्री के पति को भी अपनी पत्नी के अस्तित्व को एक वस्तु के रूप में देखना या उसके साथ ऐसा व्यवहार करना अपराध है, जो धर्म पर नहीं अधर्म पर आधारित है। द्रौपदी की आवाज केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि संपूर्ण नारी जाति का प्रतिनिधित्व करती है।

उपसंहार:

प्रस्तुत शोध पत्र द्रौपदी के चरित्र को एक स्वाभिमानी स्त्री के रूप में विश्लेषित करता है तथा आधुनिक समाज की प्रत्येक नारी को उनके सम्मान और अधिकारों की रक्षा के लिए प्रेरित करता है।

द्रौपदी के चरित्र अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जब किसी स्त्री के सम्मान और अधिकारों पर आंच आए तो उसे किसी अन्य पर आश्रित न होकर स्वयं ही उसके लिए संघर्ष करना चाहिए। अपने आत्मसम्मान के लिए अगर उन्हें समाज के रुढ़िवादी दृष्टिकोण के विरुद्ध भी जाना पड़े ,तब भी उन्हें अपने सम्मान और अधिकारों के लिए आवाज उठानी चाहिए। महाभारत के इन प्रसंगों से ज्ञात हुआ की द्रौपदी ने न केवल अपने तिरस्कार का प्रतिशोध लेने का दृढ़ निश्चय किया , बल्कि भारतीय समाज की एक सशक्त और स्वाभिमानी स्त्री बनी, जो मानो अपनी प्रेरणादायक कहानी से हर युग की स्त्री को शिक्षा दे रही हो कि स्वयं के अस्तित्व, सम्मान और अधिकारों की रक्षा के लिए अन्य पर आश्रित न होकर स्वयं ही उसका प्रयत्न करें।

अतः यह कहा जा सकता है कि महाभारत की नायिका द्रौपदी भारतीय समाज की एक अत्यंत प्रभावशाली, स्वाभिमानी एवं चेतनशील नारी है, जिसने विषम परिस्थितियों में भी अपने आत्मसम्मान की रक्षा को सर्वोपरि रखा। द्रौपदी का चरित्र न केवल नारी - साहस और संघर्ष का प्रतीक है, बल्कि वह अन्याय, शोषण और अपमान के विरुद्ध प्रतिरोध का भी प्रतीक है।

द्रौपदी का चरित्र वर्तमान समय में नारी - सशक्तिकरण, आत्मनिर्भरता और नारी अस्मिता के संदर्भ में प्रासंगिक है।

शोध उद्देश्यों की पूर्ति

प्रस्तुत शोध पत्र में द्रौपदी के चरित्र का बहुआयामी अध्ययन किया गया है। उसके व्यक्तित्व में निहित स्वाभिमान, साहस, न्यायप्रियता एवं अस्मिता के विभिन्न पक्षों को उजागर किया गया है। इस सभी प्रसंगों से अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि द्रौपदी केवल करुणा और दया की पात्र नहीं, अपितु प्रतिरोध और नारी - चेतना की प्रतीक है।

द्यूतसभा में उसका प्रतिरोध, अन्याय के विरुद्ध बुलंद आवाज उठाना तथा पांडवों को उनके कर्तव्य का स्मरण कराना उसके स्वाभिमानी चरित्र को दर्शाता है। इस प्रकार शोध के उद्देश्यों की पूर्ति द्रौपदी के चरित्र का बहुआयामी अध्ययन करने से हुई है।

संदर्भ ग्रंथ - सूची

प्राथमिक स्रोत

1. महाभारत, आदि पर्व (गीताप्रेस, गोरखपुर)

2. महाभारत, सभा पर्व (गीताप्रेस, गोरखपुर)

3. महाभारत, वन पर्व (गीताप्रेस, गोरखपुर)

4. महाभारत, विराट पर्व (गीताप्रेस,गोरखपुर)

5. महाभारत, उद्योग पर्व (गीताप्रेस, गोरखपुर)

6. महाभारत, भीष्म पर्व (गीताप्रेस, गोरखपुर)

7. महाभारत,शल्य पर्व (गीताप्रेस, गोरखपुर)

8. महाभारत, स्त्री पर्व (गीताप्रेस, गोरखपुर)

द्वितीयक स्रोत

1. नरेंद्र शर्मा की 'द्रौपदी': एक अवलोकन (पूनम काजल)

2. महर्षि वेदव्यास रचित महाभारत में द्रौपदी का उल्लेख (डॉ. राजीव रंजन)

3. महाकाव्यकाल में नारी (सुनिता मीना)

4. याज्ञसेनी (प्रतिभा राय)